प्रैक्टिकल ट्रेनिंग

यह उस समय की बात है जब मैं 19 साल का था। मेरे बडे भाई की शादी को एक साल हुआ था। हम दो भाई और एक बहन हैं जिसकी जिसकी शादी हो चुकी है। मेरे माता पिता धार्मिक विचारों के हैं और हमेशा धर्म कर्म में लगे रहते हैं। मेरे भाई का रेडीमेड कपडों का कारोबार है और अक्सर वह काम काज के सिलसिले में टूर पर बाहर जाता रहता है। मैं तब कॉलेज में पढ रहा था।

मेरी भाभी मुझे बहुत चाहती थीं क्योंकि मैं ही तो था जिसके साथ वह बात चीत कर सकती थी खास तौर पर जब भैया बिजनेस के सिलसिले में आफिस या टुर पर जाते थे। वह बडे प्यार से मेरा ख्याल रखती थीं और मुझे कभी भी यह एहसास नहीं होने देती थी कि मै घर में अकेला हूं। वह मुझे प्यार से लाला कह कर बुलाती थी। मैं भी हमेशा उनके पास रहना पसन्द करता था। वह बहुत ही खुबसूरत थीं एकदम गोरी चिट्टी लम्बे लम्बे काले बाल करीब **5'5''** और **38 24 38** का फिगर। मैं उनकी चूचियों पर फिदा था और हमेशा उनकी एक झलक पाने को बेताब रहता था। जब भी काम करते वक्त उनका आंचल उनकी छाती पर से फिसल कर नीचे गिरता या वह नीचे को झुकती मैं उनकी चूचियों की एक झलक पाने की कोशिश करता। भाभी भी यह भांप गईं थी और जान बूझ कर अक्सर ही मुझे अपने जोबन का जलवा दिखा देती।

यह वाकया तब हुआ जब मेरे भैया काम के सिलसिले में शादी के बाद पहली बार बाहर गए। मां बाबूजी पहले ही तीर्थ यात्रा पर हरिद्वार गए हुए थे और करीब एक महीने बाद लौटने वाले थे। भाभी पर ही घर संभालने की जिम्मेदारी थी। भैया मुझे घर पर ही रह कर पढाई करने को कह गए क्योंकि मेरी परीक्षा नजदीक थीं। साथ ही भाभी को भी अकेलपन महसूस ना हो। अगले दिन सुबह की बस से वह चले गए। हम दोंनों ही उन्हें विदा करने बस स्टैन्ड गए।

भाभी उस दिन बहुत खुश थी। जब हम लोग घर पहुंचे तो उन्होंने मुझे अपने कमरे में बुलाया कि उन्हें अकेले सोने की आदत नहीं है और जबतक भैया वापस नहीं आते मैं उनके कमरे में ही सोऊं। उन्होंने मुझसे अपनी किताबें वगैरा भी वहीं ला कर पढने को कहा। मैं तो खुशी से झूम उठा और फटाफट अपनी टेबल और कुछ किताबें उनके कमरे में पहुंचा दीं। भाभी ने खाना पकाया और हम दोनों ने सथ साथ खाया। आज वो मुझपर कुछ ज्यादा ही मेहरबान थी और बार बार किसी न किसी बहाने अपनी चूचियों का जलवा दिखा रहीं

थीं। खाने के बाद भाभी ने मुझे फल खाने को दिए। फल देते वक्त उन्होंने मेरा हाथ मसल दिया और बडी ही मादक अदा के साथ मुस्करा दीं। मैं शरमा गया क्योंकि यह मुस्कान कुछ अलग ही तरह की थी और इसमें शरारत झलक रही थी। खाने के बाद मैं तो पढने बैठ गया और वह अपने कपडे चेन्ज करने लगीं। गर्मियों के दिन थे और उस दिन गर्मी भी कुछ ज्यादा ही थी। मैं अपनी शर्ट और बनियान उतार कर केवल पैन्ट पहन कर पढने बैठा था। मेरी टेबुल के ऊपर दीवाल पर एक शीशा टंगा हुआ था और भाभी को मैं उसी में देख रहा था। वह मेरी ओर देख रहीं थीं और अपनी साडी उतार रही थीं। वो सोच भी नहीं सकती थी कि मैं शीशे में उनकी परछाई को घूर रहा हूं। फिर उन्होंने अपना ब्लाउज खोल कर उतार दिया। हाय क्या मदमस्त चूचियां थीं। मैं पहली बार लेस वाली ब्रा में बन्धी हुई उनकी चूचियों को देख रहा था। उनकी चूचियां काफी बडी बडी थीं और ब्रा में समा ही नहीं रही थी। छलक कर आधी से ज्यादा तो बाहर ही निकल आई थीं।

कपडे उतार कर वह बिस्तर पर चित्त लेट गई और अपने सीने को एक झीनी सी चुन्नी से ढक लिया। एक पल को तो मेरा मन किया कि मैं उन्हें पास से देखूं पर फिर सोचा कि यह ठीक नहीं होगा और फिर से अपनी पढाई में लग गया। लेटते ही वह सो गई और कुछ ही देर में उनका दुपट्टा सीने पर से हट गया और सांसों के साथ उठती गिरती उनकी मस्त रसीली चूचियां साफ सफ दिखाई देने लगी।

रात के बारह बज चुके थे। मैंने पढना रोका और बत्ती बुझाने ही वाला था कि उनकी खनखनाती हुई आवाज मेरे कानों में पडी

"लाला यहां आओ ना।"

मैं उनकी तरफ बढा। अब उन्होंने अपनी चूचियां फिर से दुपट्टे से ढक ली थीं। "क्या है भाभी" मैंने पूछा।

"लाला जरा मेरे पास ही लेट जाओ ना।हम थोडी देर बात करेंगे फिर तुम अपने बिस्तर पर जाकर सो जाना" वो बोली।

पहले तो मैं हिचकिचाया लेकिन फिर मान गया। मैं लुन्गी पहन कर सोता हूं लेकिन अब मुझे पैन्ट में सोने में दिक्कत हो रही थी। वह मेरी परेशानी भांप गई और बोलीं " कोई बात नहीं लाला। तुम अपनी पैन्ट उतार दो और जैसे रोज सोते हो वैसे ही मेरे पास सो जाओ। शरमाओ मत। आओ ना।"

मैं हैरान हो गया। मुझे अपने कानों पर यकीन नहीं हो रहा था। लुन्गी पहन कर मैने लाईट बन्द की और नाईट लैम्प जला कर मैं बिस्तर पर उनके पास ही लेट गया। जिस बदन को मैं महीनों से निहारता था मैं उसी के पास लेटा था।भाभी का अधनंगा शरीर मेरे बिल्कुल पास था। मैं ऐसे लेटा था कि उनकी चूचियां बिल्कुल नंगी मालुम दे रही थीं क्योंकि थोडा ही हिस्सा ब्रा में छुपा था। क्या हसीन नजारा था।

''इतने महीनों से मैं अकेली नहीं सोई ना इस लिए अव आदत नहीं है अकेले सोने की'' वो बोलीं।

''और मैं कभी किसी के साथ नहीं सोया'' मैं लडखडाते हुए बोला।

वह खिलखिलाई और बोली ''अनुभव ले लेना चाहिए जब भी मौका मिले। काम आएगा।'' उन्होंने मेरा हाथ पकड कर धीरे से अपनी ओर खींचा और अपने उभरे हुए जोबन पर रख दिया। मैं कुछ भी बोल नहीं पाया लेकिन अपने हाथ को उनके सीने पर रखा रहने दिया।

''मुझे यहां कुछ खुजा रहा है जरा सहलाओ ना।''

मैने ब्रा के ऊपर से ही उनकी चूचियों को सहलाना शुरू किया। भाभी ने मेरा हाथ ब्रा के कप में घुसा कर सहलाने को कहा और मेरा हाथ कप के अन्दर घुसा लिया। मैंने अपना पूरा हाथ अन्दर घुसा कर जोर जोर से उनकी चूचियों को रगडना शुरू कर दिया। मेरी हथेली की रगड पा कर भाभी के निप्पल कडे हो गए। मुलायम मांस का स्पर्श बहुत ही अच्छा लग रहा था लेकिन ब्रा के अन्दर हाथ करके मसलने में मुझे काफी दिक्कत हो रही थी। अचानक वो अपनी पीठ मेरी तरफ घुमा कर बोली '' लाला ये अंगिया का हुक खोल दो और ठीक से सहलाओ।''

कांपते हुए हाथों से मैंने उनकी ब्रा का हुक खोल दिया और उन्होने बदन से उसे उतार कर नीचे डाल दिया। मेरे दोनों हाथ अपनी नंगी छाती पर ले जा कर वो बोली '' थोडा कस कर दबाओ ना''।

मैं भी काफी उत्तेजित हो गया और जोश में आकर उनकी रसीली चूचियों से जम कर खेलने लगा। क्या बडी बडी गोल गोल चूचियां थीं। कडी कडी चूचियां लम्बे लम्बे निप्पल। पहली बार मैंने किसी औरत की चूचियों को छुआ था। भाभी को भी मुझसे अपनी चूचियों की मालिश करवाने में बडा मजा आ रहा था। मेरा लन्ड अब कडा होने लगा था और अन्डरवियर से बाहर निकलने के लिए जोर लगा रहा था। मेरा 8'' का लन्ड पूरे जोश में आ

गया था। भाभी की चूचियों को मसलते मसलते मैं उनके बदन के बिल्कुल पास आ गया था और मेरा लन्ड उनकी जांघ में रगड मारने लगा।

अचानक वो बोली " लाला यह मेरी टांगों में क्या चुभ रहा है।"

मैंने हिम्मत करके जवाब दिया " यह मेरा हथियार है। तुमने भैया का तो देखा ही होगा ना।"

"हाथ लगा कर देखूं" उन्होंने पूछा लेकिन मेरे जवाब देने से पहले ही अपना हाथ मेरे लन्ड पर रख कर उसे टटोलने लगीं। अपनी मुठ्ठी मेरे लन्ड पर कस कर बन्द कर ली और बोली " बाप रे बहुत कडक है"। वह मेरी तरफ घूमी और अपना हाथ मेरे अन्डरवियर में घुसा कर मेरे फडफडाते हुए लन्ड को इलास्टिक के ऊपर निकाल लिया। लन्ड को कस के पकडे हुए वह अपना हाथ लन्ड की जड तक ले गई जिस से सुपाडा बाहर आ गया। सुपाडे का साइज और आकार देखकर वह बहुत ही हैरान हो गईं।

"लाला कहां छुपा के रखा था इसे इतने दिन" उन्होंने पूछा।

"यहीं तो था तुम्हारे सामने लेकिन तुमने कभी ध्यान ही नहीं दिया।"

"मुझे क्या पता था कि तुम्हारा इतना बडा होगा। छोटे भाई का लौंडा बडे भाई के लौंडे से बडा भी हो सकता है मैंने सोचा भी नहीं था।"

मुझे उनकी बिन्दास बोली पर आश्चर्य हुआ जब उन्होंने 'लौंडा' कहा साथ ही बडा मजा भी आया। वह मेरे लन्ड को अपने हाथ में लेकर खींच रही थी और कस कर दबा भी रही थी। फिर भाभी ने अपना पेटीकोट अपनी कमर के ऊपर उठा लिया और मेरे तने हुए लन्ड को अपनी जांघों के बीच ले कर रगडने लगी। वह मेरी तरफ करवट ले कर लेट गई ताकि मेरे लन्ड को ठीक से पकड सके। उनकी चूचियां मेरे मुंह के बिल्कुल पास थीं और मैं उन्हें कस कस कर दबा रहा था। अचानक उन्होंने अपनी चूची मेरे मुंह में ठेलते हुए कहा "चूसो इनको मुंह में लेकर।"

मैंने उनकी बाईं चूची को अपने मुंह में भर लिया और जोर से चूसने लगा। फिर थोडी देर के लिए मैंने चूची को मुंह से निकाला और बोला "मैं हमेशा तुम्हारे ब्लाउज में कसी तुम्हारी चूचियों को देखता था और हैरान होता था। इनको छूने की बहुत इच्छा होती थी और दिल करता कि इन्हें मुंह में लेकर चूसूं और इनका रस पिऊं। पर डरता था पता नहीं तुम क्या

सोचो और कहीं मुझसे नाराज ना हो जाओ। तुम नहीं जानती भाभी कि तुमने मुझे और मेरे लन्ड को कितना परेशान किया है।"

"अच्छा तो फिर आज अपनी तमन्ना पूरी कर लो।जी भर कर दवाओ चूसो और मजे लो। मैं तो पूरी की पूरी तुम्हारी हूं। जैसे चाहो वैसे करो।"

फिर क्या था। भाभी की हरी झन्डी पाकर मैं टूट पडा भाभी की चूचियों पर। मेरी जीभ उनके कडे निप्पल को महसूस कर रही थी। मैंने अपनी जीभ भाभी के उठे हुए कडे निप्पलों पर घुमाई। मैं दोनों अनारों को कस के पकडे हुए था और बारी बारी से उन्हें चूस रहा था। मैं ऐसे कस कस कर चूचियों को दबा रहा था माने इनका पूरा का पूरा रस ही निचोड लूंगा। भाभी भी पूरा साथ दे रही थीं। उनके मुंह से 'आह उई सी सी' की आवाज निकल रही थी। मुझसे पूरी तरह से सटे हुए वो मेरे लन्ड को बुरी तरह से मसल रही थी और मरोड रही थी। उन्होने अपनी बाईं टांग मेरी जांघ के ऊपर चढा दी मेरे लन्ड को अपनी जांघों के बीच रख लिया। मुझे उनकी जांघों के बीच एक मुलायम मुलायम रेशमी अहसास हुआ। यह उनकी चूत थी। भाभी ने पैन्टी नहीं पहनी थी और मेरा लन्ड का सुपाडा उनकी झांटों में घूम रहा था। मेरे सब्र का बान्ध टूट रहा था।

"भाभी मुझे कुछ हो रहा है मैं अपने आपे में नहीं हूं। प्लीज मुझे बताओ मैं क्या करूं।"

"तुमने कभी किसी लडकी को चोदा है आज तक।"

"नहीं।"

"इतना तगडा लौंडा ले के भी कुछ नहीं किया। कितने दुख की बात है। कोई भी लडकी इसे देख कर कैसे मना कर सकती है। शादी तक ऐसे ही रहने का इरादा है क्या।" मैं क्या बोलता । मेरे मुंह में कोई शब्द नहीं थे। मैं चुपचाप उनके चेहरे को देखते हुए चूची मसलता रहा। उन्होंने अपना मुंह मेरे मुंह से विलकुल सटा दिय और फुसफुसा कर बोली "अपनी भाभी को चोदोगे"।

"क्क क क्यों नहीं" मैं बडी मुश्किल से बोल पाया। मेरा गला सूख रहा था। वह बडे मादक अन्दाज में मुस्करा दी और मेरे लन्ड को आजाद करते हुए बोलीं "ठीक है।लगता है अपने अनाडी देवर राजा को मुझे ही सब सिखाना पडेगा। पर गुरू दक्षिना पूरे मन से देना। चलो अपनी चडढी उतार कर पूरे नंगे हो जाओ।"

मैं पलंग पर से उतर गया और अपना अन्डरवियर उतार दिया। मैं अपने तने हुए लन्ड को लेकर नंग धडंग सा अपनी अधनंगी भाभी के सामने खडा हो गया। भाभी अपने रसीले होठों को अपने दांतों में दबाकर देखती रही और अपने पेटकिोट का नाडा खींच कर ढीला कर दिया।

"तुम भी तो इसे उतार कर नंगी हो जाओ" कहते हुए मैंने उनके पेटीकोट को खींचा। भाभी ने अपने चूतड ऊपर कर दिए जिससे कि पेटीकोट उनकी टांगों से उतर कर अलग हो गया। भाभी अब पूरी तरह नंगी होकर मेरे सामने चित्त पडी थीं। भाभी ने अपनी टांगें फैला दीं और मुझे रेशमी झांटों के जंगल के बीच छुपी हुई उनकी रसीली गुलाबी चूत का नजारा देखने को मिला। नाईट लैम्प की हल्की हल्की रोशनी में चमकते हुए उनके नंगे जिस्म को देखकर मैं उत्तेजित हो गया और मेरा लन्ड मारे खुशी के झूमने लगा। भाभी ने अब मुझसे अपने ऊपर चढने को कहा। मैं तुरन्त उनके ऊपर चढ कर लेट गया और उनकी चूचियों को दबाते हुए उनके रसीले होंठ चूसने लगा। भाभी ने भी मुझे कस कर अपने आलिंगन में कस कर जकड लिया और चुम्बन का जवाब देते हुए मेरे मुंह में अपनी जीभ ठेल दी। हाय क्या स्वादिष्ट औार रसीली जीभ थी। मैं भी उनकी जीभ को जोर शोर से कस कस के चूसने लगा। हमारा चुम्बन पहले प्यार के साथ हल्के से था और फिर पूरे जोश के साथ। कुछ देर तक तो हम ऐसे ही चिपके रहे। फिर मैं अपने होंठ भाभी के नाजुक नाजुक गालों पर रगड रगड कर चूमने लगा। फिर भाभी ने मेरी पीठ पर से हाथ ऊपर ला कर मेरा सर पकड लिया और उसे नीचे की ओर ठेला। मैं अपने होंठ उनके होठों से उनकी ठोडी पर लाया फिर गले और कन्धों को चूमता हुआ चूचियों पर पहुंचा। मैं एक बार फिर उनकी चूचियों को मसलता हुआ और खेलता हुआ काटने और चूसने लगा। उन्होंने बदन के निचले हिस्से को मेरे बदन के नीचे से निकाल लिया और हमारी टांगें एक दूसरे से दूर हो गईं। अपने दाएं हाथ से वह मेरा लन्ड पकड कर उसे मुट्ठी में बान्ध कर सहलाने लगीं और अपने बांए हाथ से मेरा दाहिना हाथ पकड कर अपनी टांगों के बीच ले गईं। जैसे ही मेरा हाथ उनकी चूत पर पहुंचा उन्होंने अपनी चूत के दाने के ऊपर उसे रगड दिया। समझदार को इशारा ही काफी है। मैं उनकी चूचियों को चूसता हुआ उनकी चूत को रगडने लगा।

"लाला अपनी उंगली अन्दर डालो ना" कहते हुए भाभी ने मेरी उंगली अपनी चूत के मुंह पर दबा दी। मैंने अपनी उंगली उनकी चूत के दरार में घुसा दी और वह पूरी की पूरी अन्दर चली गई। जैसे जैसे मेरी उंगली उनकी चूत के अन्दर का मुआयना करती गई मेरा मजा बढता ही गया। उनकी चूत मेरी उंगली को दबा दबा कर अन्दर को खींच रही थी मानो उसे चूस रही हो। जैसे ही मेरी उंगली उनके चूत के दाने से टकराई उन्होंने जोर से सिसकारी ले

कर अपनी जांघों को कस कर बन्ध लिया और चूतड उठा कर मेरे हाथ को ही चोदने लगी। उनकी चूत से पानी बह रहा था। थोडी देर तक ऐसे ही मजा लेने के बाद मैंने अपनी उंगली उनकी चूत से बाहर निकाल ली और सीधा होकर उनके ऊपर लेट गया। भाभी ने अपनी टांगें फैला दी और मेरे फडफडाते हुए लन्ड को पकड कर सुपाडा चूत के मुहाने पर रख लिया। उनकी झांटों का स्पर्श मुझे पागल बना रहा था।

"अब अपना लौंडा मेरी बुर में घुसाओ। धीरे से। प्यार से। नहीं तो मुझे दर्द होगा। आााााााह।"

मैं क्योंकि नौसिखुआ था इसलिए शुरू शुरू में मुझे अपना लन्ड उनकी टाईट चूत में घुसाने में काफी परेशानी हुई। मैंने जब जोर लगा कर लन्ड अन्दर ठेलना चाहा तो उन्हें दर्द भी हुआ। लेकिन पहले से ही उंगली से चुदाई करवा कर उनकी चूत काफी गीली हो गई थी। भाभी भी हाथ से लन्ड को निशाने पर लगा कर रास्ता दिखा रही थीं और रास्ता मिलते ही मेरा एक ही धक्के में सुपाडा अन्दर चला गया। इससे पहले कि भाभी संभले या आसन बदले मैंने दूसरा धक्का लगाया और पूरा का पूरा लन्ड मक्खन जैसी चूत की जन्नत में दाखिल हो गया।

"ऊई ई ई ई ई ई ई ई मांााा ऊऊऊऊहहहहहह ओह लाला। ऐसे ही रहो कुछ देर। हिलना डुलना नहीं। हाय रे बडा जालिम है तुम्हारा लन्ड तो। मार ही डाला मुझे तुमने देवर राज्ज्ज्जा।" भाभी को काफी दर्द हो रहा लगता था। पहली बार जो इतना मोटा और लम्बा लन्ड उनकी बुर में घुसा था। मैं अपना लन्ड उनकी चूत में घुसा कर चुपचाप पडा रहा। भाभी की चूत फडक रही थी और अन्दर ही अन्दर मेरे लन्ड को मसल रही थी। उनकी उठी उठी हुई चूचियां काफी तेजी से ऊपर नीचे हो रही थी। मैंने हाथ बढा कर दोनो चूचियों को पकड लिया और मुंह में लेकर चूसने लगा। भाभी को कुछ राहत मिली और उन्होंने कमर हिलानी शुरू कर दी।

"लाला शुरू करो अब। चोदो मुझे। ले लो मजा जवानी का मेरे राज्ज्ज्ज्जा" कहती हुई भाभी अपनी गान्ड हिलाने लगी। मैं ठहरा अनाडी। समझ में नहीं आया कि कैसे शुरू करूं। पहले अपनी कमर को ऊपर किया तो लन्ड बाहर आ गया। फिर जब नीचे किया तो ठीक निशाने पर नहीं बैठा और भाभी की चूत को रगडता हुआ नीचे फिसल कर गान्ड में जाकर फंस गया। मैंने दो तीन बार धक्का लगाया पर लन्ड चूत में वापस जाने के बजाए फिसल कर गान्ड में चला जाता। भाभी से रहा नहीं गया और तिलमिला कर ताना देती हुई

बोली " अनाडी का चोदना और चूत का सत्यानाश। अरे मेरे भोले लाला जरा ठीक से निशाना लगा कर ठेलो। नहीं तो यूंही चूत के ऊपर लौंडा रगड रगड कर झड जाओगे।"

मैं बोला "भाभी अपने इस अनाडी देवर को कुछ सिखाओ। जिन्दगी भर तुम्हें गुरू मानूंगा और लन्ड की दक्षिणा दूंगा।"

भाभी लम्बी सांस लेती हुई बोली "हां लाला। मुझे ही कुछ करना होगा नहीं तो देवरानी आकर कोसेगी कि तुम्हें कुछ नहीं सिखाया।" मेरा हाथ अपनी चूची पर से हटाया और मेरे लन्ड पर रखती हुई बोली "इसे पकड कर मेरी चूत के मुंह पर रखो और लगाओ धक्का जोर से।"

मैंने वैसा ही किया और मेरा लन्ड उनकी चूत को चीरता हुआ पूरा का पूरा अन्दर चला गया।

"अब लन्ड को बाहर निकालो लेकिन पूरा नहीं। सुपाडा अन्दर ही रहने देना। फिर दोबारा पूरा लन्ड अन्दर पेल देना। इसी तरह से बार करो।"

मैने वैसा ही करना शुरू किया और मेरा लन्ड धीरे धीरे उनकी चूत में अन्दर बाहर होने लगा। फिरर भाभी ने स्पीड बढा कर जल्दी जल्दी अन्दर बाहर करने को कहा। मैंने अपनी स्पीड बढा दी और तेजी से लन्ड अन्दर बाहर करने लगा। भाभी को भी पूरी मस्ती आ रही थी और वह भी नीचे से कमर उठा उठा कर मेरे हर शॉट का जवाब देने लगी। लेकिन ज्यादा स्पीड होने से बार बार मेरा लन्ड बाहर निकल जाता। इससे चोदाई की लय टूट जाती। आखिर भाभी से रहा नहीं गया और करवट लेकर मुझे अपने ऊपर से उतार दिया और मुझे चित्त लिटा कर मेरे ऊपर चढ गईं। अपनी जांघों को फैला कर मेरी जांघों के बगल कर के मेरी जांघ पर अपने गद्देदार चूतड रखकर बैठ गई। उनकी चूत मेरे लन्ड पर थी और हाथ मेरी कमर को पकडे हुए थे। बोली " मैं दिखाती हूं कि कैसे चोदते हैं" और मेरे ऊपर लेटकर कमर का धक्का लगाया। मेरा लन्ड घप से चूत के अन्दर दाखिल हो गया।

भाभी ने अपनी रसीली चूचियों को मेरी छाती पर रगडते हुए अपने गुलाबी होंठ मेरे होठों पर रख दिए और जीभ मेरे मुंह के अन्दर ठेल दी। फिर भाभी ने मजे से कमर हिला हिला कर शॉट लगाना शुरू किया। बडे कस कस कर शॉट लगा रही थी मेरी प्यारी भाभी। चूत मेरे लन्ड को अपने में समाए हुए तेजी से ऊपर नीचे हो रही थी। मुझे लग रहा था कि मैं तो जन्नत में पहुंच गया हूं। अब पोजिशन उल्टी हो गई थी। भाभी मानो मर्द थी जो अपनी

माशूका को कस कस कर चोद रहा था। जैसे जैसे भाभी की मस्ती बढ रही थी उनके शॉट भी तेज होते जा रहे थे। अब भाभी मेरे ऊपर मेरे कन्धों को पकड कर घुटनों के बल बैठ गई और जोर जेर से कमर हिला कर लन्ड को तेजी से अन्दर बाहर लेने लगी। उनका सारा बदन हिल रहा था और सांस तेज तेज चल रही थी। भाभी की चूचियां तेजी से ऊपर नीचे हो रही थी। मुझसे रहा नहीं गया और हाथ बढा कर दोनों चूचियों को पकड कर जोर जोर से मसलना शुरू कर दिया। भाभी एक सधे हुए खिलाडी की तरह कमान अपने हाथों में लिए हुई थी और कस कस कर शॉट लगा रही थी। जैसे जैसे वह झडने के करीब आ रही थी उनकी रफ्तार बढती जा रही थी। कमरे में फच फच की आवाज गूंज रही थी। जब उनकी सांस फूल गई तो खुद नीचे आकर मुझे अपने ऊपर खींच लिया और टांगों को फैला कर ऊपर उठा लिया। बोली "मैं थक गई मेरे राज्ज्ज्जाा। अब तुम मोर्चा संभालो"।

मै झट उनकी जांघों के बीच बैठ गया और निशाना लगा कर झटके से लन्ड अन्दर डाल कर उनके ऊपर लेट कर दनादन शॉट लगाने लगा। भाभी ने अपनी टांगों को मेरी कमर पर रखकर मुझे जकड लिया और जोर जोर से चूतड उठा उठा कर चुदाई में साथ देने लगी। मैं भी अब उतना अनाडी नहीं रहा था और ताक ताक कर चूचियों को मसलते हुए शॉट लगा रहा था। कमरा हमारी चुदाई की आवाजों से भरा पडा था। भाभी कमर हिला कर चूतड उठा उठा कर चुदा रही थी और बोले जा रही थी " आााािह आााािह ऊंहहह आोोोााािह ओोोोोोोोह हाााााािया मेरे राज्ज्ज्ज्ज्जााा। मर गई रे। लाााााालल्ल्ल्लााा चोद रे चोद। ऊईईई ईईई मेरी मां। फट गईईईईईईईईईईइ रे आज तो। मेरा तो दम ही निकाल दिया तुमने मेरे राज्ज्ज्ज्ज्जा। बडा जालिम है तुम्हारा लौंडा। एकदम महीन मसाला पीस दिया रे।"

मैं भी बोल रहा था " ले मेरी रान्न्न्न्नी ले ले मेरा लन्ड अपनी ओखली में। बडा तडपाया है तूने मुझे। ले और ले। ले मेरी भाभी यह लन्ड तेरा ही है। आाााााािहहहहह ऊऊऊऊऊऊऊहहह क्या जन्नत का मजा सिखाय है तूने। मैं तो तेरा गुलाम हो गया।"

भाभी गान्ड उछाल उछाल कर मेरा लन्ड अपनी चूत में ले रही थी और मैं भी पूरे जोश को साथ चूचियों को मसल मसल कर चोदे जा रहा था। उफ्फ्फ्फ्फ क्या आग सी लगी हुई थी हम दोनों को तन बदन में।

भाभी मुझे ललकार कर कहती "लगाओ शॉट मेरे राजा"।

मैं जवाब देता "ये ले मेरी रानी ले ले अपनी चूत में।"

"जरा और जोर से सरकाओ अपना लन्ड मेरे राजा"

"ये ले मेरी रानी ये लन्ड तो बना ही तेरे लिए है।"

"देखो राज्ज्ज्जा मेरी चूत तो तेरे लन्ड की दीवानी हो गई। और जोर से और जोर से आाााााााााईईईईईईईईई मेरे राज्ज्ज्ज्जाााा। मैं गईईईईईईईईईईईईईईईईई रे" कहते हुए भाभी ने मुझे कस कर अपनी बांहों में जकड लिया और उनकी चूत के ज्वालमुखी ने लावा छोड दिया।

"मैं भी आयाााााा मेरीईईईईईईईईईईइ रान्न्न्न्न्न्न्न्न्न्नीईईईईईईईईईईईई। ले ले मेरे लन्ड का रस चूस ले अपनी चूत से। मैं आयाााााा मेरी जान" कहते हुए मेरे लन्ड ने भी पानी छोड दिया और मैं हांफते हुए उनकी चूचियों पर सिर रखकर कस के चिपक कर लेट गया।

यह मेरी पहली चुदाई थी। इसलिए मुझे काफी थकान सी महसूस हो रही थी। मैं भाभी के सीने पर सर रखकर सो गया। भाभी भी एक हाथ से मेरे सर को धीरे धीरे सहलाते हुए दूसरे हाथ से मेरी पीठ सहला रही थी। कुछ देर बाद जब होश आया तो मैंने भाभी के रसीले होठों का चुम्बन लेकर उन्हें जगाया। भाभी ने करवट लेकर मुझे अपने ऊपर से हटाया और मुझे बांहों में कस कर कान में फुसफुसा कर बोली "तुमने तो कमाल कर दिया लाला। क्या गजब की ताकत है तुम्हारे लन्ड में।"

"कमाल तो आपने किया है भाभी। आजतक मुझे मालूम ही नहीं था कि अपने लन्ड का इस्तेमाल कैसे करना है। ये तो आपकी ही मेहरबानी है जो आज मेरे लन्ड को आपकी चूत की सेवा करने का मौका मिला।" अबतक मेरा लन्ड उनकी चूत के बाहर आकर झांटों के जंगल में रगड मार रहा था।

भाभी ने अपनी मुलायम हथेलियों में मेरे लन्ड को पकड कर सहलाना शुरू किया। उनकी उंगलियां मेरे आंड से खेल रही थी। उनकी नाजुक उंगलियों का स्पर्श पाकर मेरा लन्ड भी जग गया और एक अंगडाई लेकर भाभी की चूत पर ठोकर मारने लगा। भाभी ने कस कर अपनी मुट्ठी में मेरे लन्ड को कैद कर लिया और बोली "बहुत जान है तुम्हारे लन्ड में। देखो फिर फडफडाने लगा। अब तो मैं इसे छोडुंगी नहीं।"

हम दोनों अगल बगल लेटे हुए थे। भाभी ने मुझे चित्त लिटा दिया और मेरी टांग पर अपनी टांग चढा कर लन्ड को हाथ से उमेठने लगी। साथ ही सथ भाभी अपनी कमर को हिलाते हुए अपनी झांट और चूत मेरी जांघ पर रगडने लगी। उनकी चूत पिछली चुदाई से अभी तक गीली थी और उसका स्पर्श मुझे पागल बनाए हुए था। अब मुझसे रहा नहीं गया और करवट लेकर भाभी की तरफ मुंह कर के लेट गया। उनकी चूची को मुंह में दबा कर चूसते

हुए अपनी उंगली चूत में घुसा कर सहलाने लगा। भाभी एक सिसकारी लेकर मुझसे कस पर चिपक गई और जोर जोर से कमर हिलाते हुए मेरी उंगली से चुदवाने लगी। अपने हाथ से मेरे लन्ड को कस कर जोर जोर से मूठ मार रही थी। मेरा लन्ड पूरे जोश में अकड कर लोहे की तरह सख्त हो गया था। अब भाभी की बेताबी हद से ज्यादा बढ गई थी और खुद चित्त होकर मुझे अपने ऊपर खींच लिया। मेरे लन्ड को पकड कर अपनी चूत पर रखती हुई बोली "आओ राज्जा। सेकेन्ड राउन्ड हो जाए।"

मैंने झट कम्र उठा कर धक्का दिया और मेरा लन्ड उनकी चूत को चीरता हुआ जड तक धंस गया। भाभी चीख उठी "जीयो मेरे राज्जा। क्या शाट मारा है। अब मेरे सिखाए हुए तरीके से दो शॉट पर शॉट और फाड दो मेरी चूत को।"

भाभी का प्रोत्साहन पाकर मैं दूने जोश में आ गया और चूचियों को पकड कर हुमच हुमच कर भाभी की चूत में लन्ड पेलने लगा। उंगली की चुदाई से भाभी की चूत गीली हो गई थी और मेरा लन्ड सटासट अन्दर बाहर हो रहा था। भाभी नीचे से कमर उठा कर हर शॉट का पूरे जोश के साथ जवाब दे रही थी। भाभी ने अपने दोनें हाथों से मेरी कमर को पकड रखा था और जोर से अपनी चूत में लन्ड घुसवा रही थी। वह मुझे इतना उठाती कि बस लन्ड का सुपाडा अन्दर रहता और फिर जोर से नीचे खींचती हुई घप से लन्ड चूत में घुसवा लेती। पूरे कमरे में हमारी तेज सांस और घपाघप की आवाज गूंज रही थी।

जब हम दोनो की ताल से ताल मिल गई तब भाभी ने अपने हाथ नीचे खिसका कर मेरे चूतडों को पकड लिया और कस कस कर दबोचते हुए मजा लेने लगी। कुछ देर बाद भाभी ने कहा "आओ एक नया आसन सिखाती हूं" और मुझे अपने ऊपर से हटा कर किनारे कर दिया। मेरा लन्ड 'पक' की आवाज के साथ बाहर निकल आया। मैं चित्त लेटा हुआ था और मेरा लन्ड पूरे जोश में सीधा खडा था। भाभी उठ कर घुटनों और हथेलियों पर मेरे बगल में ही बैठ गई। मैं लन्ड को हाथ में पकड कर बस उनकी हरकत देखता रहा।

भाभी ने मेरा हाथ लन्ड पर से हटा कर मुझे खींच कर उठाते हुए कहा "ऐसे पडे पडे क्या देख रहे हो। चलो अब उठ कर पीछे से लन्ड घुसाओ"।

मैं भी उठ कर भाभी के पीछे आ कर घुटनों के बल बैठ गया और लन्ड को हाथ में पकड कर भाभी की चूत पर रगडने लगा। क्या मस्त गोल गोल गद्देदार गान्ड थी। भाभी ने जांघों को फैला कर अपने चूतड ऊपर को उठा दिए जिससे उनकी रसीली चूत साफ नजर आने लगी। भाभी का इशारा समझ कर मैंने लन्ड का सुपाडा उनकी चूत पर रख कर धक्का दिया

और मेरा लन्ड चूत को चीरता हुआ जड तक धंस गया। भाभी ने एक सिसकारी भर कर अपनी गान्ड पीछे कर के मेरी जांघ से चिपका दी। मैं भी भाभी की पीठ से चिपक कर लेट गया और बगल से हाथ डाल कर उनकी दोनों चूचियों को पकड कर मसलने लगा। वो भी मस्ती में धीरे धीरे चूतडों को आगे पीछे करके मजे लेने लगी।उनके मुलायम चूतड मेरी मस्ती को दोगुना कर रहे थे। मेरा लन्ड उनकी रसनही चूत में आराम से आगे पीछे हो रहा था। मस्ती का वो आलम था कि बस पूछो मत।

कुछ देर यूंही मजा लेने के बाद भाभी बोली "चलो राज्जा अब आगे उठ कर शॉट लगाओ। अब रहा नहीं जाता"।

मैं उठ कर सीधा हो गया और भाभी के चूतडों को दोनों हाथों से कस कर पकड कर हमला शुरू कर दिया। जैसा कि भाभी ने सिखाया था मैं पूरा लन्ड धीरे से बाहर निकाल कर जोर से अन्दर कर देता। शुरू तो मैंने धीरे धीरे किया लेकिन जैसे जैसे जोश बढता गया धक्कों की रफ्तार भी बढती गई। धक्का लगाते समय मैं भाभी के चूतडों को कस के अपनी ओर खींच लेता ताकि शॉट तगडा पडे। भाभी भी उसी रफ्तार से अपने चूतडों को आगे पीछे कर रही थी। हम दोनों की सांस तेज हो गई थी। भाभी की मस्ती पूरे परवान पर थी। नंगे जिस्म जब आपस में टकराते तो धप धप की आवाज आती। काफी देर तक मैं यूही कम्र पकड कर धक्का लगाता रहा। जब हालत बेकाबू होने लगी तब भाभी को फिर से चित्त लिटा कर उन पर सवार हो गया और चुदाई का दौर चालू रखा। हम दोनों ही पसीने से लथपथ हो गए थे पर कोई भी रूकने का नाम नहीं ले रहा था। तभी भाभी ने मुझे कस कर जकड लिया और अपनी टांगें मेरे चूतड पर कस कर जोर जोर से कमर हिलाते हुए चिपक कर झड गई। उनके झडने के बाद मैं भी भाभी की चूचियों को मसलते हुए झड गया और हांफते हुए उनके ऊपर लेट गया। हम दोनों काफी देर तक एक दूसरे से चिपक कर पडे रहे।

कुछ देर बाद भाभी ने पूछा "क्यों लाला कैसी लगी चुदाई"।

"हाय भाभी जी करता है जिन्दगी भर इसी तरह तुम्हारी चूत में लन्ड डाले पडा रहूं।"

"जब तक तुम्हारे भैया नहीं वापस आते तब तक तो दिन हो या रात मेरी चूत तुम्हारी है। जैसे मर्जी हो मजे लो। अब थोडी देर आराम करते हैं।"

"नहीं भाभी। कम से कम एक बार तो और हो जाए। देखो मेरा लन्ड अभी भी वे करार है।"

भाभी ने मेरे लन्ड को अपनी मुट्ठी में कस लिया और बोली "ये तो ऐसे रहेगा ही चूत की खुशबू जो मिल गई है। पर देखो रात के तीन बज गए हैं। अगर सुबह टाईम से नहीं उठे तो पडोसियों को शक हो जाएगा। अभी तो सारा दिन सामने है और आगे के भी इतने दिन हमारे हैं। जी भर कर मस्ती लेना। मेरा कहा मानोगे तो रोज नया स्वाद चखाउंगी।"

भाभी का कहा मान कर मैंने जिद छोड दी भाभी करवट लेकर लेट गई और मुझे अपने से सटा कर लिटा लिया। मैंने भी उनकी गान्ड की दरार में लन्ड फंसा कर चूचियों को दोनों हाथों से पकड लिया और भाभी के कन्धे को चूमता हुआ लेट गया। नींद कब आई इसका पता ही नहीं चला।

सुबह जब अलार्म घडी बजी तो मैंने समय देखा। सुबह के सात बज रहे थे। भाभी ने मेरी तरफ मुस्करा कर देखा और एक गरमा गरम चुम्बन मेरे होठों पर जड दिया। मैंने भी भाभी को जकड कर उनके चुम्बन का जोरदार जवाब दिया। फिर भाभी उठ कर अपने रोज के काम काज में लग गई। व्ह बहुत ही खुश थी और उनके गुनगुनाने की आवाज मेरे कानों में शहद घोल रही थी। तभी घन्टी बजी और हमारी नौकरानी आशा आ गई।

उस दिन मैं कालेज नहीं गया। नाश्ता करने के बाद मैं पढने बैठ गया। जब आशा कमरे में झाडू लगाने आई तब भी मैं टेबल पर बैठा पढाई करता रहा। पढाई तो क्या खाक होती। बस रात का ड्रामा ही आंखाों के सामने चलता रहा। सामने खुली किताब में भी भाभी का संगमरमरी बदन उनकी रसीली चूचियां और प्यारी सी चूत ही नजर आ रही थी।

"बाबू जरा पैर हटा लो झाडू देनी है"।

मैं चौंक कर हकीकत की दुनिया में वापस आया। देखा आशा कमर पर हाथ रखे मेरे पास खडी है। मैं खडा हो गया और वो झुक कर झाडू लगाने लगी। मैं उसे यूं ही देखने लगा। गेंहुआ रंग भरा भरा बदन। तीाखे नाक नक्श । बडे ही साफ सुथरे ढंग से सज संवर कर आई थी। आज से पहले मैंने उस पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया था। वो आती थी और अपना काम कर के चली जाती थी। पर आज की बात ही कुछ और थी। भाभी से चुदाई की ट्रेनिंग पाकर एक रात में ही मेरा नजरिया बदल गया था। अब मैं हर औरत को चुदाई के नजरिये से देखना चाहता था। आशा लाल हरी रंग की साडी पहने हुई थी जिसका पल्लू छाती पर से लाकर कमर में दबा लिया था। छोटा सा पर गहरे गले का चोलीनुमा ढीला ब्लाउज उसकी चूचियों को संभाले हुए था। जब वो झुक कर झाडू लगाने लगी तो ब्लाउज के गहरे गले से उसकी गोल गोल चूचियां साफ दिखाई दे रही थी। मेरा लन्ड फनफना कर

तन गया। रात वाली भाभी की चूचियां मेरे दिमाग में कौंध गई। तभी आशा की नजर मुझ पर पडी। मुझे एक टक घूरता पाकर उसने एक दबी सी मुस्कान दी और अपना आंचल संभाल कर चूचियों को छुपा लिया। अब वो मेरी तरफ पीठ कर के टेबल के नीचे झाडू लगा रही थी। उसके चूतड तो और भी मस्त थे। फैले फैले और गद्देदार। मैं मन ही मन सोचने लगा कि इसकी गान्ड में लन्ड फांसा कर चूचियों को मसलते हुए चोदने में कितना मजा आएगा। बेखयाली में मेरा हाथ मेरे तन्नाए हुए लन्ड पर पहुंच गया और मैं पाजामे के ऊपर से ही सुपाडे को मसलने लगा। तभी आशा अपना काम पूरा कर के पलटी और मेरी हरकत देख कर मुंह पर हाथ रख कर हंसती हुई बाहर चली गई। मैं झेंप कर कुर्सी पर बैठ पढाई करने की कोशिस करने लगा।

जब आशा काम कर के चली गई तब भाभी ने मुझे खाने के लिए आवाज दी। मैं डाईनिंग टेबल पर आ गया। भाभी ने खाना देते हुए पूछा "क्यों लाला। आशा के साथ कोई हरकत तो नहीं की।"

मैंने अचकचा कर पूछा "नहीं तो। कुछ बोल रही थी क्या"।

"नहीं कुछ खास नहीं। बस कह रही थी कि आप का देवर अब जवान हो गया है जरा ठीक से खयाल रखना उसका।"

मैं कुछ नहीं बोला और चुपचाप खाना खा कर अपनी स्टडी टेबल पर आ कर पढने बैठ गया। भाभी किचेन का काम निबटाा कर कमरे में आई और मेरे पास ही पलंग पर बैठ गई। उन्होने मेरे हाथ से किताब ले ली और बोली "ज्यादा पढाई मत करो। सेहत पर असर पडेगा" और अपनी एक आंख दबा कर कनखी मार दी। मैंने उन्हें अपनी गोद में खींच कर बिठा लिया और उनके होठों को कस कर चूम लिया। भाभी ने भी अपना मुंह खोल कर मेरे ऊपरी होंठ को अपने मुंह में ले लिया और चूसने लगी। मैं भी भाभी के रसीले निचले होंठ को बडी देर तक चूसता रहा।

"तुम कितनी अच्छी हो भाभी" मैं बोला। मुझे अपनी चूत दी। मुझे चोदना सिखाया। सच बताओ क्या भैया भी तुम्हें ऐसे ही चोदते हैं।"

"चोदते तो वो भी पूरे जोश से हैं पर वो तुम्हारे जितने ताकतवर नहीं हैं । उनका लौंडा भी तुम्हारे से छोटा है और तुम्हारे लौडे जितना मोटा भी नहीं है। बहुत जल्दी पानी छोड देते हैं और तुरन्त सो जाते हैं। मगर मैं प्यासी रह जाती हूं और रात भर जलती हुई बुर में उंगली डाले जागती रहती हूं।"

भाभी ने मुझे कस कर मुजे जकड लिया और मेरा मुंह अपने सीने से चिपका लिया। मैंने भी अपने हाथ भाभी की पीठ पर कस कर उनकी चूचियों को चूम लिया। मैंने उनकी चोली ढीली कर दी और अपना एक हाथ सामने ला कर चोली के अन्दर कर के एक चूची को कस कर पकड लिया और मसलने लगा। मेरा दूसरा हाथ नीचे का सफर कर रहा था और उनका लंहगा ऊपर को उनके एक चूतड को पकड लिया। आज भाभी नीचे कुछ भी नहीं पहने हुई थी और मेरा हाथ मुलायम चिकने बदन को मसल रहा था। भाभी भी चुप नहीं बैठी थी और मेरे नाडे को ढीला कर के ऊपर से ही हाथ घुसा कर मेरे लन्ड को मसलने लगी।

"लाला तुम्हारा लन्ड बहुत जोरदार है। कितना कडक कितना मोटा और लम्बा। रात जब तुमने पहली बार मेरी चूत में घुसाया तो ऐसा लगा कि यह तो मेरी बुर को फाड ही डालेगा। सच कितना अच्छा होता अगर मेरी शादी तुम्हारे साथ होती। फिर तो दुनिया की कोई परवाह ही नहीं होती और रात दिन तुम्हारा लन्ड अपनी चूत में लिए हुए मजे लेती।"

कुछ देर तक मेरे लन्ड और झांटों से खेलने के बाद भाभी ने हाथ निकाल कर मेरे पाजामे का नाडा खोल दिया। फिर खडे होकर अपनी चोली और लंहगा भी उतार कर पूरी नंगी हो गई। फिर मुझे कुर्सी से उठ कर पलंग पर बैठने को कहा। मैं खडा हुआ तो पाजामा अपने आप उतर गया। जब मैं पलंग पर बैठ कर भाभी की मस्त छलकती हुई चूचियों को देख रहा था तो मारे मस्ती के मेरा कडक लन्ड छत छूने की कोशिस कर रहा था। भाभी मेरी जांघों के बीच बैठ कर दोनों हाथों से मेरे लौंडे को सहलाने लगी। कुछ देर यूंही सहलाने के बाद अचानक भाभी ने अपना सिर नीचे झुकाया और अपने रसीले होठों से मेरे सुपाडे को चूम कर उसे मुंह में ले लिया। मैं एकदम से चौंक गया। मैंने सपने में भी नहीं सोचा था कि ऐसा होगा।

"भाभी यह क्या कर रही हो। मेरा लन्ड तुमने अपने मुंह में क्यों लिया है।"

"चूसने के लिए और किस लिए। तुम बस आराम से बैठे रहो और बस लन्ड चुसाई का मजा लो। एक बार चुसवा लोगे तो फिर बार बार चूसने को कहोगे।" भाभी मेरे लन्ड को लॉलीपॉप की तरह चटखारे ले लेकर चूसने लगी। मैं बता नहीं सकता हूं कि लन्ड चुसवाने में मुझे कितना मजा आ रहा था। भाभी के रसीले होंठ मेरे लन्ड को रगड रहे थे। फिर भाभी ने अपना होंठ गोल कर के मेरा पूरा लन्ड अपने मुंह में ले लिया और मेरे आन्डों को हाथों से सहलाते हुए सिर ऊपर नीचे करना शुरू कर दिया मानो वह मुंह से ही मेरे लन्ड को चोद रही हो। धीरे धीरे मैंने भी अपनी कमर हिला कर भाभी के मुंह को चोदना शुरू कर दिया। मैं तो मानो सातवें आसमान पर था। बेताबी तो सुबह से ही थी। थोडी ही देर में

लगा कि मेरा लन्ड अब पानी चेड देगा। मैं किसी तरह अपने ऊपर काबू कर के बोला " भाभीइइइइइइइइइइइइ मेरा पानी छूटने वाला है"।

भाभी ने मेरी बात पर कुछ ध्यान नहीं दिया बल्कि अपने हाथों से मेरे चुतडों को जकड कर और तेजी से सिर ऊपर नीचे करना शुरू कर दिया। मैंने भी भाभी के सिर को कस कर पकडा और उतनी ही तेजी से लन्ड भाभी के मुंह में पेलने लगा। कुछ ही देर में मेरे लन्ड ने पानी छोड दिया और भाभी ने गटगट करे पूरा वीर्य पी लिया। सुबह से काबू में रखा हुआ मेरा वीर्य इतनी तेजी से निकला कि उनके मुंह से बाहर निकल कर उनकी ठोडी पर फैल गया। कुछ बून्दें तो टपक कर उनकी चूचियों पर भी जा गिरी। झडने के बाद मैंने अपना लन्ड निकाल कर भाभी के गालों पर रगड दिया। क्या खूबसूरत नजारा था। मेरा वीर्य भाभी के मुंह गाल होंठ और रसीली चूचियों पर चमक रहा था।

भाभी ने अपनी गुलाबी जीभ अपने होठों पर फिरा कर वहां लगा वीर्य चाटा और फिर अपनी हथेलियों से अपनी चूचियों को मसलते हुए पूछा "क्यों देवर राजा मजा आया लन्ड चुसवाने में"।

"बहुत मजा आया भाभी। तुमने तो एक दूसरी ही जन्नत की सैर करा दी मेरी जान। आज तो मैं तुम्हारा सात जन्मों के लिए गुलाम हो गया। कहो क्या हुक्म है।"

" हुक्म क्या बस अब तुम्हारी बारी है।"

"क्या मतलब मैं कुछ समझा नहीं।"

"मतलब ये मेरे भोले देवर राजा कि अब तुम मेरी चूत चाटो।" यह कह कर भाभी खडी हो गई और अपनी चूत मेरे चेहरे के पास ले आई। मेरे होंठ उनकी चूत के होठों को छूने लगे। भाभी ने मेरे सिर को पकड कर अपनी कमर आगे की और अपनी चूत मेरे नाक पर रगडने लगी। मैंने भी भाभी के चूतडों को दोनों हाथों से पकड लिया और उनकी गान्ड सहलाते हुए उनकी रसनही चूत को चूमने लगा। भाभी की चूत की प्यारी प्यारी खुशबू मेरे दिमाग पर छाने लगी। मैं दीवानों की तरह भाभी की चूत और उसके चारों तरफ के इलाके को चूमने लगा। बीच बीच में मैं अपनी जीभ निकाल कर भाभी की रानों को भी चाट लेता।

भाभी मस्ती से भर कर सिसकारी लेते हुए बोली " हाय राजा आाााह जीभ से चाटो ना। अब और मत तडपाओ राजा। मेरी बुर को जीभ से चाटो। डाल दो अपनी जीभ मेरी चूत में। अन्दर डाल कर जीभ से चोदो।"

अब तक भाभी की नशीली चूत की खुशबू ने मुझे बुरी तरह से पागल बना दिया था। मैंने भाभी की चूत पर से मुंह उठाए बिना उन्हें खींच कर पलंग पर बैठा दिया और खुद जमीन पर बैठ गया। भाभी की जांघों को फैला कर अपने दोनों कन्धों पर रख लिया और फिर आगे बढ कर भाभी के भगोष्ठों को अपनी जीभ से चाटना शुरू कर दिया। भाभी मस्ती से सिहरने लगी और अपने चूतड और आगे खिसका कर अपनी चूत को मेरे मुंह से बिल्कुल सटा दिया। अब भाभी के चूतड पलंग से बाहर हवा में झूल रहे थे और उनकी मखमली जांघों को पूरा दवाब मेरे कन्धों पर था। मैंने अपनी जीभ पूरी की पूरी उनकी चूत में ठेल दी और चूत की अन्दरूनी दीवालों को सहलाने लगा। भाभी मस्ती से तिलमिला उठी और अपने चूतड उठा उठा कर अपनी चूत मेरी जीभ पर दबाने लगी।

"हाय राजा। क्या मजा आ रहा है। अब अपनी जीभ को अन्दर बाहर करो नाााा। चोदो राज्ज्जाा चोद्दो। अपनी जीभ से चोदो मुझे मेरे सैंया। हाय मेरे राज्जा तुम ही तो मेरे असली सैंया हो। पहले क्यों नहीं मिले। अब सारी कसर निकालूंगी। बडा तडपी हूं पिछले साल भर से। हाय राजा चोदो मेरी चूत को अपनी जीभ से।"

मुझे भी पूरा जोश आ गया और भाभी की चूत में जल्दी जल्दी जीभ अन्दर बाहर करते हुए उसे चोदने लगा। भाभी अभी भी जोर जोर से कमर उठा कर मेरे मुंह को चोद रही थी। मुझे भी इस चुदाई का मजा आने लगा। मैंने अपनी जीभ कडी कर के स्थिर कर ली और सिर को आगे पीछे करके भाभी की चूत चोदने लगा। भाभी का मजा दोगुना हो गया। अपने चूतडों को जोर जोर से उठाती हुई बोली " और जोर से लाला और जोर से। हाय मेरे प्यारे देवर आज से मैं तेरी माशूका हो गई। जिन्दगी भर के लिए चुदाऊंगी तुझ से। आााह ऊईईईई मां।" भाभी अब झडने वाली थी। वह जोर जोर से चिल्लाते हुए अपनी चूत मेरे पूरे चेहरे पर रगड रही थी। मैं भी पूरी तेजी से जीभ लपलपा कर भाभी की चूत पूरी तरह से चाट रहा था। अपनी जीभ भाभी की चूत में पूरी तरह अन्दर डालकर मैं हिलाने लगा। जब मेरी जीभ भाभी की भगनासा से टकराई तो भाभी का बान्ध टूट गया और मेरे चेहरे को अपनी जांघों में जकड कर भाभी ने अपनी चूत मेरे मुंह से चिपका दी। भाभी का पानी बहने लगा और मैं भाभी के दोनों भगोष्ठों को अपने मुंह में दबा कर जवानी के अमृत को पीने लगा।

मेरा लन्ड फिर से लोहे की रॉड की तरह सख्त हो गया था। मैं उठ कर खडा हुआ और अपने लन्ड को हाथ से सहलाते हुए भाभी को पलंग पर सीधा लिटा कर उनके ऊपर चढने लगा। भाभी ने मुझे रोकते हुए कहा "ऐसे नहीं मेरे सैंया। चूत का मजा तो तुम कल ले ही चुके हो। आज मैं तुम्हें दूसरे छेद का मजा दूंगी।"

मेरी समझ में कुछ नहीं आया।

भाभी बोली " राजा आज तुम अपने शाही लौंडे को मेरी गान्ड में डालो" और उठ कर बैठ गईं। मेरे हाध हटा कर दोनो हाथों से मेरा लन्ड पकड लिया और सहलाते हुए अपनी दोनों चूचियों के बीच दबा कर लन्ड के सुपाडे को चूमने लगी। भाभी की चूचियों की गरमाहट पाकर मेरा लन्ड और भी जोश में अकड गया।

मैं हैरान था। इतनी छोटी गान्ड में लन्ड कैसे जाएगा। मैं बोला "भाभी गान्ड में कैसे"।

भाभी बोली "हां राजा गान्ड में ही। पर देवर राजा पीछे से चोदना इतना आसान नहीं है। तुम्हें जोर तो पूरा लगाना होगा।" इतना कहकर भाभी ने ढेर सारा थूक मेरे लन्ड पर उडेल दिया और पूरे लन्ड की मालिश करने लगी।

"पर भाभी गान्ड में लन्ड घुसाने के लिए ज्यादा जोर क्यों लगाना पडेगा" मैंने भाभी की दोनो चूचियों को कस कस कर दबाते हुए पूछा।

"वो इस लिए राजा कि जब औरत गरम होती है तो उसकी चूत पानी छोडती है जिससे लौडा आने जाने में आसानी होती है। पर गान्ड तो पानी नहीं छोडती इसीलिए घर्षण ज्यादा होता है और लन्ड को ज्यादा ताकत लगानी पडती है। गान्ड मराने वाले को भी बहुत तकलीफ होती है। पर मजा बहुत आता है मारने वाले को भी और मरवाने वाले को भी। इसीलिए गान्ड मारने से पहले पूरी तैयारी कर ली जाती है।"

"क्या तैयारी करनी है भाभी" मैं जानने को उत्सुक था।

भाभी मुस्करा कर पलंग से उठी और अपने चूतडों को लहराते हुए ड्रेसिंग टेबल से वैसलीन की शीशी उठा लाई। ढक्कन खोल कर ढेर सी वैसलीन अपने हाथ में ली और मेरे लौंडे की मालिश करने लगी। अब मेरा लौंडा रोशनी में चमकने लगा था। फिर मेरे हाथ में डब्बी दे कर बोली "अब मैं झुकती हूं और तुम मेरी गान्ड में ठीक से वैसलीन लगा दो"।

भाभी पलंग पर पेट के बल लेट गई और अपने घुटनों के बल होकर अपने चूतड हवा में उठा दिए। देखने लायक नजारा था। भाभी के गोल मटोल गोरे गोरे चूतड मेरी आंखों के सामने लहरा रहे थे। मुझसे रहा नहीं गया और झुक कर चूतड को मुंह में भरकर कस कर काट लिया। भाभी की चीख निकल गई। फिर मैंने ढेर सारी वैसलीन लेकर भाभी के चूतडों की दरार में लगा दी। भाभी बोली "अरे मेरे भोले सैंया खाली ऊपर से लगाने से नहीं

होगा। ऊंगली से लेकर अन्दर भी लगाओ और अपनी उंगली पेल कर पहले छेद को ढीला करो"।

मैंने अपनी बीच वाली उंगली पर वैसलीन लगा कर भाभी के गान्ड में घुसाने की कोशिश की। पहली बार जब नहीं घुसी तो दूसरे हाथ से छेद को फैला कर दोबारा कोशिश की तो मेरी थोडी सी उंगली घुस पाई। मैंने थोडा बाहर निकाल कर फिर झटका दे कर डाला तो घपाक से पूरी उंगली धंस गई। भाभी ने एकदम से अपने चूतड सिकोड लिए जिससे मेरी उंगली फिर बाहर निकल आई। भाभी बोली "इसी तरह उंगली अन्दर बाहर करते रहो कुछ देर"। मैं भाभी के कहे मुताबिक भाभी की गान्ड में उंगली जल्दी जल्दी अन्दर बाहर करने लगा। मुझे इसमें बडा मजा आ रहा था। भाभी भी कमर हिला हिला कर मजा ले रही थी।

कुछ देर तक यूंही मजा लेने के बाद भाभी बोली "चलो राज्जा आ जाओ मोर्चे पर और मारो गान्ड अपनी भाभी की।"

मैं उठ कर घुटनों के बल बैठ गया और लन्ड को पकड कर भाभी की गान्ड के छेद पर रख दिया। भाभी ने भी थोडा पीछे होकर लन्ड को निशाने पर रखा। फिर मैंने भाभी के चूतडों को दोनों हाथों से पकड कर धक्का लगाया। भाभी का छेद बहुत टाईट था। मैं बोला "भाभी नहीं घुस रहा है"।

भाभी ने अपने दोनो हाथों से अपने चूतडों को खींच कर छेद चौडा किया और दोबारा जोर लगाने को कहा। इस बार मैंने थोडा और जोर लगाया और मेरा सुपाडा भाभी की गान्ड में चला गया। भाभी की कसी गान्ड ने मेरे सुपाडे को जकड लिया। मुझे बडा मजा आया। मैंने दोबारा धक्का दिया और भाभी की गान्ड को चीरता हुआ मेरा आधा लन्ड भाभी की गान्ड में दाखिल हो गया। भाभी जोर से चीख उठी "उई मां दुखता है मेरे राजा"। पर मैंने भाभी की चीख पर कोई ध्यान दिए बिना लन्ड को थोडा सा पीछे खींच कर जोरदार शॉट लगाया। मेरा 8 इन्च का लौंडा भाभी की गान्ड को चीरता हुआ पूरा का पूरा अन्दर दाखिल हो गया। भाभी फिर चीख उठी। वो बार बार अपनी कमर को हिला हिला कर मेरे लन्ड को बाहर निकालने की कोशिश कर रही थी। मैंने आगे को झुक कर भाभी की चूचियां पकड ली और उन्हें सहलामे लगा।लन्ड अभी भी पूरा का पूरा भाभी की गान्ड में था। कुछ देर भाभी की गान्ड में लन्ड डाले डाले उनकी चूचियों को सहलाता रहा।

जव भाभी कुछ नॉर्मल हुई तो अपने चूतड हिला कर बोली " चलो राजा अब ठीक है"। भाभी का सिग्नल पाकर मैंने दुबारा सीधे होकर भाभी के दोनों चूतडों को पकड कर धीरे

धीरे कमर हिला कर लन्ड अन्दर बाहर करना शुरू कर दिया। भाभी की गान्ड बहुत ही टाईट थी। इसे चोदने में बडा मजा आ रहा था। अब भाभी भी अपना दर्द भूल कर सिसकारी भरते हुए मजा लेने लगी। उन्होंने अपनी एक उंगली अपनी चूत में डाल कर कमर हिलाना शुरू कर दिया। भाभी की मस्ती देख कर मैं भी जोश में आ गया और धीरे धीरे अपनी रफ्तार बढा दी।

मेरा लन्ड अब पूरी तेजी के साथ भाभी की गान्ड में अन्दर बाहर हो रहा था। भाभी भी पूरी तेजी से कमर आगे पीछे करके मेरे लन्ड का मजा ले रही थी। लन्ड ऐसे अन्दर बाहर हो रहा था मानो इन्जन का पिस्टन। पूरे कमरे में हमारी चोदाई की थप थप गूंज रही थी। जब भाभी के थिरकते हुए चूतडों से मेरी जांघें टकराती तो लगताा कोई तबलची तबले पर थाप दे रहा हो। भाभी पूरी तेजी से अपनी चूत में उंगली अन्दर बाहर करती हुई सिसकारी भर रही थी। हम दोनों ही पसीने पसीने हो गए थे पर कोई भी रूकने का नाम नहीं ले रहा था। भाभी मुझे बार बार ललकार रही थी " चोद लो राजा चोद लो अपनी भाभी की गान्ड। आज फाड डालो इसे। शाबास मेरे शेर। मजा ले लो जवानी का। और जोर से राज्जा और जोर से। फाड डाली तुमने मेरी तो।"

मैं भी हुमच हुमच कर शॉट लगा रहा था। पूरा का पूरा लन्ड बाहर खींच कर झटके से अन्दर डालता तो भाभी की चीख निकल जाती। मेरा लावा अब निकलने ही वाला था। उधर भाभी भी अपनी मंजिल के पास थी। तभी मैंने एक झटके से लन्ड निकाला और भाभी की चूत में जड तक धांस दिया। भाभी इसके लिए तैयार नहीं थी इसलिए उनकी उंगली भी चूत में ही रह गई जिससे उनकी चूत और टाईट लग रही थी। मैं भाभी के बदन को पूरी तरह अपनी बांहों में समेट कर दनादन शॉट लगाने लगा। भाभी भी संभल कर जोर जोर से आह ऊह करती हुई चूतड पीछे करके अपनी चूत में मेरा लन्ड लेने लगी। हम दोनों की सांस फूल रही थी। आखिर मेरा ज्वाला मुखी फूट पडा और मैं भाभी की पीठ से चिपक कर भाभी की चूत में झड गया। भाभी का भी चरमोत्कर्ष आ गया और वे भी चीखती हुई झड गई। हम दोनों उसी तरह से चिपके हुए पलंग पर लेट गए और थकान की वजह से सो गए।

जब मेरी आंख खुली तो देखा अन्धेरा हो गया था। हम दोनों नंग धडंग एक दूसरे से लिपट कर सो रहे थे। मैंने धीरे से भाभी का हाथ अपने ऊपर से हटाया और टेबल लैम्प ऑन कर दिया ताकि भाभी की नींद में खलल ना पडे। फिर वापस पलंग पर भाभी के पास आकर बैठ गया। भाभी अब हाथ पैर फैला कर चित्त पडी सो रही थी। मैं उनके खूबसूरत बदन को निहारने लगी। भाभी की मस्त चूचियां अभी भी तनी हुई थी। उनमें जरा भी ढलाव नहीं

था। चिकना चिकना बदन। पतली कमर। फैले हुए चूतड। केले के तने सी कसी हुई चिकनी जांघें। और अपना पूरा जलवा दिखाती हुई भाभी की रसीली चूत। मुझसे और रहा नहीं गया। मैने झुक कर भाभी की प्यारी चूत का चुम्बन ले लिया। फिर उठ कर भाभी की गदराई जांघों के बीच आ गया। हौले से भाभी की जांघों को और फैलाया और जीभ से धीरे धीरे भाभी की चूत को सहलाने लगा। भाभी ने नीन्द में ही अपने आप अपनी जांघें और फैला दी। अब उनकी गुलाबी चूत का मुंह पूरा खुल गया था। मैंने एक उंगली उनकी चूत में घुसा कर अन्दर बाहर करते हुए जीभ से चूत के दाने को सहलाना शुरू कर दिया। भाभी सोते सोते ही कमर हिलाने लगी।

भाभी की मस्ती देख कर मुझ से और रहा नहीं गया। मेरा लन्ड अबतक तन कर फन फनाने लगा था। मैं घुटनों के बल झुक गया और अपना सुपाडा भाभी की चूत के दरवाजे पर रख कर हल्का सा धक्का दिया। भाभी की चूत तो अपना रस छोड ही रही थी। घप से मेरा सुपाडा अन्दर दाखिल हो गया। फिर मैं भाभी के ऊपर सीधा होकर लेट गया और उनकी एक चूची को मुंह में लेकर चूसते हुए कस कर कमर का धक्का लगाया। मेरा पूरा का पूरा लन्ड दनदनाता हुआ भाभी की चूत को चीरता हुआ अन्दर चला गया।

भाभी चौंक कर उठ गई और बोली "कौन है"।

मैंने भाभी के होठों को चूमते हुए कहा "तुम्हारा दीवाना देवर। तुम किसी और का इन्तजार कर रही थी क्या"।

भाभी ने मुस्कुराते हुए मुझे बांहों में जकड लिया और बोली "अरे वाह मेरे चुदक्कड राजा। एक ही दिन में पूरे एक्सपर्ट हो गए। मुझे सोते सोते ही चोदना शुरू कर दिया। कल तक तो यह भी नहीं मालूम था कि अपने आठ इंच के लन्ड का करना क्या है"।

मैंने भी भाभी के गालों को काटते हुए जवाब दिया "यह तो तुम्हारी मेहरबानी है भाभी वरना मेरी जवानी यूंही निकल जाती। क्या करूं भाभी तुम्हारी मस्त नंगी जवानी को देख कर रहा नहीं गया। तुम्हें बुरा तो नहीं लगा।"

भाभी ने मुझे और कस कर जकड कर नीचे से चूतड उछालते हुए जवाब दिया "नहीं मेरे राजा। बुरा काहे मानूंगी। मेरी जवानी तो अब तुम्हारे नाम हो गई। जब चाहो जैसे चाहो जहां चाहो डुबकी लगा लो।"

भाभी का जवाब पाकर मैं बहुत खुश हुआ और कमर हिला हिला कर चोदना शुरू कर दिया। भाभी भी पूरे जोश के साथ मेरे हर शॉट का जवाब कमर उठा उठा कर दे रही थीं। पूरे कमरे में एक बार फिर फचाफच का मधुर संगीत गूंजने लगा। भाभी जोर जोर से चूतड उछाल रही थी। मैं भी पागलों की तरह भाभी की चूचियों का रस चूसता हुआ कमर हिला हिला कर चोदे जा रहा था। तभी भाभी ने अपनी टांगों को ऊपर कर के मेरी कमर पर कस लिया और जोर जोर से चूतड उछाल उछाल कर चुदाने लगी। मैंने भी भाभी के रसीले होठों को चूमते हुए अपनी रफ्तार बढा दी।

भाभी अब मुझे कस कर जकडे हुई थी। उनकी चूत ने पानी छोडना सुरू कर दिया था जिससे फच फच की आवाज और तेज हो गई थी। भाभी हांफते हुए मेरी गर्दन में बांहें डाल कर अपने से चिपकाते हुए बोली " मैं तो गई मेरे राजा। तुम्हारी रानी गई। उई मां क्या जालिम लौंडा है तुम्हारा। चोद डाला तुमने मुझे। मैं गईईईईईईईईईईईई।" और भाभी मुझसे चिपक कर शान्त हो गई। मैं भी और नहीं रूक पाया और भाभी को चूमता हुआ उनकी चूत में झड गया।

कुछ देर तक हम यूंही पडे रहे। फिर भाभी मुझे अपने ऊपर से हटा कर पलंग से उतर कर खडी हो गई। झुक कर अपनी चूत देखी तो एक आह सी निकल गई। मुझे अपनी चूत दिखाती हुई बोली "देखो राजा क्या हाल किया है तुमने मेरा। कितनी सूज गई है मेरी चूत।"

मैंने देखा सचमुच भाभी की चूत डबल रोटी जैसी सूज गई थी। मैंने लेटे लेटे ही भाभी के चूतडों को पकड कर उन्हें अपने पास खींचा और चूत का चुम्बन ले लिया। भाभी ने मुझे दूर करते हुए कहा "अब छोडो मुझे। रात भर भूखे ही रहना है क्या। मुझे अब खाना बनाना है । कुछ खाओगे नहीं तो कमजोर हो जाओगे। मालूम है जी भर कर चुदाई करने के बाद भरपूर खाना खाना चहिए। तभी जवानी का असली मजा आता है।"

मैं बोला " तुम क्यों कष्ट करती हो। अभी बाजार से हम दोनों के लिए खाना लेकर आता हूं। तुम तो बस आराम करो और रात भर की चुदाई की तैयारी करो।"

भाभी बोली "अगर बाजार जा ही रहे हो तो एक ब्लू फिल्म का कैसेट भी लेते आना। पिक्चर देखते हुए चोदाई करने में और भी मजा आता है।"

मैं कपडे पहन कर बाजार चल दिया और भाभी भी अपनी नाईटी पहन कर बिस्तर ठीक करने में लग गई। जब लौट कर आया तो देखा भाभी ने पूरी तैयारी कर ली थी। टीवी

बेडरूम में ही ले आई थी और कमरे में रूम स्प्रे भी कर दिया था। हल्की हल्की रोशनी में पूरा माहौल सेक्सी लग रहा था। भाभी ने झटपट खाना परोसा और हम दोनों ने एक दूसरे को खाना खिलाया। बीच बीच में भाभी अपने होठों में कौर दबा कर मुझे चुम्बन के साथ खिला देती। खाना खत्म होते होते हम दोनों नाईट शो के लिए तैयार हो गए थे।

खाना खा कर मैंने कपडे बदले और लुंगी पहन ली। भाभी तो पहले से ही अपनी झीनी सी नाईटी पहने हुई थी जिस में से उनका पूरा बदन नजर आ रहा था। मैंने भाभी को पीछे से पकड कर अपना लन्ड उनकी गान्ड की दरार में दबाते हुए अपनी बांहों में जकड लिया और कस कर गालों को चूसने लगा। भाभी ने अपने मुंह हटाते हुए कहा "गाल पर नहीं। निशान पड जाएगा तो सारी दुनिया देखेगी। चलो अब पिक्चर लगाओ।"

मैंने भाभी को छोड कर कैसेट वीसीआर में लगा कर ऑन कर दिया। फिर हम दोनो पलंग पर बैठ कर देखने लगे। शुरूआत में लेस्बियन सीन थे। दो लडकियां एक दूसरे से लिपटा लिपटी कर रही थी। फिर उन्होंने एक दूसरे को नंगा करके लिपट गई। भाभी बडी ही तन्मयता से यह देख रही थी और अपनी नाईटी के ऊपर से चूत दबा रही थी। मैंने भाभी की कमर में हाथ डाल कर अपनी ओर खींचा तो उन्होंने अपना बदन ढीला छोड कर मेरी गोद में अधलेटी हो गई। मैं भाभी की नाईटी को खोल कर उनकी चूचियों से खेलने लगा। भाभी भी अब नाईटी हटा कर अपनी चूत में उंगली करते हुए पिक्चर देख रही थी। टीवी पर दोनों लडकियां अब **69** की पोजिशन में थी और एक दूसरे की चूत को चाट रही थी। मेरा लन्ड भाभी के कन्धे के नीचे दबा हुआ था और निकलने को बेताब हो रहा था। भाभी ने थोडी सी पोजिशन बदल कर मेरा लन्ड अपनी कांख में दबा लिया और धीरे धीरे आगे पीछे करने लगी।

तभी टीवी पर एक मर्द आया। दोनों लडकियों को इस हालत में देख कर उसने झटपट अपने कपडे उतारे और एक लडकी की चूत में अपना लन्ड धांस दिया। बडा जबरदस्त लन्ड था उसका। भाभी ने कस कर अपनी कांख में मेरा लन्ड दबा लिया और बोली "हाय क्या लन्ड है। आदमी है कि घोडा।"

दूसरी लडकी अभी भी पहली लडकी के नीचे ही थी और उस आदमी के आन्डों को जीभ से चाट रही थी। वह आदमी तेजी से पहली लडकी को चोद रहा था। जब वो झड कर हट गई तो उसने दूसरी लडकी के मुंह में लन्ड डाल कर चोदने लगा। जब वह झडने के करीब हुआ तो लन्ड निकाल कर लडकी के पूरे बदन पर पिचकारी छोड दी। पहली लडकी ने जीभ से चाट चाट कर दूसरी लडकी का बदन साफ किया।

भाभी बोली "आओ राजा लेट कर पिक्चर देखते हैं" और करवट ले कर लेट गई। मैं भी भाभी के पीछे उनकी गान्ड में लन्ड दबाकर लेट गया। एक हाथ से मैं भाभी की चूचियां दबा रहा था और दूसरे हाथ से उनकी चूत को सहला रहा था। भाभी भी अपना एक हाथ पीछे करके मेरा लन्ड सहलाने लगी।

पिक्चर में दोनों लडकियां उस आदमी को सैन्डविच बना कर लेटी थी और उसके लौंडे को खडा करने की कोशिश कर रही थी। फिर एक लडकी उसका लन्ड चूसने लगी और दूसरी ने खडे होकर उस आदमी के मुंह पर अपनी चूत रख दी। वह आदमी दोनों का मजा ले रहा था। जब उसका लन्ड फिर से जोश में आया तो लन्ड चूसने वाली लडकी उलटी होकर लन्ड पर बैठ गई और उछल उछल कर चोदाने लगी। मुझे बडा ही अच्छा लगा ौर भाभी के कान में बोला "आऔ भाभी इस आसन में चोदते हैं।" भाभी तो पहले ही से तैयार थी। मैं पलंग से नीचे पैर करके बैठ गया और भाभी अपनी टांग दोनो तरफ फैला कर मेरे कुतुबमीनार पर बठ गई। मैं भाभी की चूचियों को दाबते हुए नीचे से चूतड उछालने लगा। भाभी भी पिक्चर वाली लडकी की तरह उछल उछल कर चुदाने लगी। अब हम दोनों आहिस्ता आहिस्ता चुदाई करते हुए पिक्चर का मजा लेरहे थे। मैं बोला "भाभी अगर एक चूत चाटने को भी होती तो कितना मजा आता"।

वह बोली "अभी तो एक से ही काम चलाओ राज्जा। दूसरी का देखती हूं कोई इन्तजाम होता है कि नहीं।"

जवतक पिक्चर चलती रही हम इसी तरह लन्ड चूत का मजा लेते रहे। जब पिक्चर खत्म हुई तब मैं बोला "तो भाभी हो जाए"।

भाभी बोली "देर किस बात की है"। भाभी पलट कर फिर मेरी गोद में बैठ गई। अब भाभी का मुंह मेरी तरफ था। मैंने भाभी के चूतडों को पकड कर चूचियों को मुंह में लिया और नीचे से जोरदार शॉट लगाने लगा। भाभी भी मेरे लन्ड पर कूद कूद कर मजे लेने लगी। भाभी की दोनों चूचियां मस्ती से उछल रही थी।

थोडी देर तक इसी तरह हम चुदाई करते रहे। फिर भाभी ने धक्का देकर मुझे पलंग पर लिटा दिया और ऊपर से चोदना शुरू कर दिया। भाभी की रसीली चूचियां मेरे मुंह के पास झूल रही थी। मैं बार बार उन्हें मुंह में लेता और छोडता। आखिर भाभी झडकर मेरे ऊपर लेट गई। मैं भी भाभी को जकड कर चूमते हुए पडा रहा।

कुछ देर बाद भाभी बोली "क्यों राजा। बस करें या अभी और जान बाकी है"।

मैं बोला ''भाभी आपकी चूत के लिए तो मेरा लन्ड हमेशा तैयार है। चलो आ जाओ मोर्चे पर''।

भाभी बोली ''पहले 69 करते हैं'' और घूम कर मेरे मुंह पर अपनी चूत टिका कर मेरे लन्ड को प्यार करने लगी। मैंने भी दोनों हाथों से भाभी के चूतडों को पकड कर चूत में जीभ अन्दर बाहर करनी शुरू कर दी। जब मैंने अपनी जीभ भाभी के घान्ड के छोद पर लगाई तो भाभी ने मस्ती में आकर मेरा पूरा लन्ड मुंह में ले लिया और अपनी एक उंगली मेरी गान्ड में पेल दी। इस अचानक हमले के लिए मैं तैयार नहीं था और मैंने झटके से कमर उठा दी जिससे मेरा लन्ड पूरा का पूरा भाभी के मुंह में चला गया। फिर तो भाभी मेरी गान्ड में घपाघप उंगली अन्दर बाहर करने लगी। साथ ही साथ वो अपना मुंह ऊपर नीचे करके लन्ड को चोद भी रही थी। सच बताता हूं भाभी की उंगली से बडा मजा आ रहा था। मैं भी भाभी की गान्ड में उंगली धंसा कर अन्दर बाहर करते हुए जीभ से उनकी चूत को चोदने लगा।

हम काफी देर तक 69 की पोजिशन में मजा लेते रहे। फिर सीधे होकर लेट कर चुदाई का खेल दुबारा शुरू कर दिया। उस रात मैंने भाभी की चूत कम से कम तीन बार और ली। हम तभी सोए जब सुबह की रोशनी नजर आई।

सुबह जब भाभी ने मुझे उठा कर चाय दी तो आठ बज चुके थे। बोली ''जल्दी से उठ कर कपडे पहन लो। आशा आती ही होगी''।

मैंने भाभी को पकड कर अपने पास लिटा लिया और एक गरमागरम चुम्बन ले लिया। बोला ''आने दो उसे। तुम तो बस मेरे पास ही रहो। देखो ना सपने में भी तुम ही आती रही और लन्ड देवता फिर से फड फडा रहे हैं।''

भाभी किसी तरह अपने को छुडा कर खडी हो गई और जाते हुए बोली ''लगता है कि तुम्हारे लिए परमानेन्ट चूत का इन्तजाम जल्दी ही करना होगा। खैर वो भी कर ही दूंगी। पर अभी तो छोडो मुझे। वादा करती हूं कि आशा के जाते ही तुम्हारी प्यास बुझा दूंगी।''

''भाभी आशा को भी पटा लो ना। फिर साथ साथ मजे लेंगे वो भी तो कितनी मस्त है। कल रात की पिक्चर याद है ना। तुम भी मजे लेना आशा के साथ।''

''शैतान कहीं के। एक चूत का मजा क्या मिला चारों तरफ नजर डालने लगे। वैसे तुम्हारी बात में दम है। वह लगती तो चालू है और आसानी से पट सकती है। मौका देख कर

कोशिश करूंगी। पर आज तो बस हम और तुम दूसरा और कोई नही" कहते हुए भाभी कमरे के बाहर चली गई।

भाभी के जाने के बाद मैं उठ कर बाथरूम में घुस गया। नहा कर तौलिया लपेट कर ही बाहर निकला तो देखा कि आशा बिस्तर ठीक कर रही है। चादर पर पडे मेरे लन्ड और भाभी की चूत के पानी के धब्बे रात की कहानी सुना रहे थे। आशा झुक कर निशान वाली जगह को सूंघ रही थी। मेरी तो ऊपर की सांस ऊपर और नीचे की सांस नीचे रह गई। मेरे कदमों की आहट सुन कर आशा उठ गई और मेरी तरफ देखती हुई अदा से मुस्करा दी। फिर इठलाते हुए मेरे पास आई और आंख मार कर बोली "लगता है रात देवर भाभी ने जम कर खाट कबड्डी खेली है"।

मैं हिम्मत कर के बोला "क्या मतलब।"

वह मुझसे बिल्कुल सटती हुई बोली "इतने भोले भी मत बनो। सब समझ रहे हो और यह चादर भी रात की सारी कहानी सुना रही है। अब इनकी कहानी मैं सुनाउंगी सबको।"

मैं बौखला गया। ये तो हमें बदनाम कर देगी। फिर मैंने गौर से उसे देखा। मस्त लौन्डिया थी। सांवली रंगत। छरहरा बदन। उठी हुई मस्त चूचियां। उसने अपना पल्लू सामने से लेकर कमर में दबाया हुआ था जिस से उसकी चूचियां और उभर कर सामने आ गई थी। वह बात करते करते मुझसे एक दम सट गई और उसकी तनी हुई चूचियां मेरी नंगी छाती से छूने लगी। जब वो बोलती तो उसकी सांस मेरी सांस से टकरा जाती। मेरा लन्ड जोश में फडफडा उठा। मुझे सुबह भाभी की बात याद आ गई और मैंने सोचा कि इस से अच्छा मौका फिर नहीं मिलने वाला। साली खुद ही तो मेरे पास आई है। मैने हिम्मत करके उसे कमर से पकड लिया और अपनी ओर खींच कर अपने से चिपका लिया और बोला "चल रानी एक पकड तेरे साथ भी हो जाए। फिर तू सुनाना कहानी सबको।"

वह एक दम से घबडा गई और अपने को छुडाने की कोशिश करने लगी। पर मैं उसे कस कर पकडे हुए चूमने की कोशिश करने लगा। वह मुझसे दूर हटने की कोशिश करती रही पर मेरी मजबूत पकड के सामने वो बेबस थी। उसके गालों को चूम ही लिया मैंने और उसे लिए हुए बिस्तर पर जा पडा। उसे बिस्तर पर पटक कर मैं उस के ऊपर चढ गया और उसके दोनो हाथ फैला कर मजबूती से जकड लिए। फिर नीचे झुक कर उस के होठों को चूमने की कोशिश करने लगा। वह अपना चेहरा इधर उधर घुमा रही थी पर मैं उसके होठों को चूमने में कामयाब हो ही गया। लेकिन तुरन्त उसने अपना चेहरा घुमा लिया जिससे

हमारा चुम्बन अधूरा ही रह गया। मैंने उसके हाथ छोड दिए और चेहरे को दोनों हाथों से थाम कर होठों का रस चूसने लगा। कुछ देर को वो शान्त हुई मानो थक गई हो और फिर मेरे बालों को पकड कर मुझे दूर करने की कोशिश करने लगी। वह किसी तरह से मेरे नीचे से निकलने में कामयाब हो गई और बिस्तर से उतर कर खडी होने लगी। पर मैंने फिर उसे पीछे से कमर में हाथ डालकर बिस्तर पर लिटा लिया। हम दोनों की हाथापाई में मेरा तौलिया खुल गया था और मेरा 8'' का फनफनाता हुआ लौंडा आजाद हो गया। उसे बिस्तर पर लिटा कर अपना लन्ड उसकी गान्ड में दबाते हुए मैंने अपनी एक टांग उसकी टांग पर चढा कर उसे दबोच लिया।

दोनो हाथों से चूचियों को पकड कर मसलते हुए बोला ''नखरे क्यों दिखाती है साली। खुदा ने हुस्न दिया है तो क्या मार ही डालेगी। अरे हमें नहीं देगी तो क्या अचार डालेगी। चल आजा और प्यार से अपनी मस्त जवानी का मजा ले और कुछ अपने यारों को भी दे''।

''नहीं नहीं मुझे छोड दो नहीं तो मैं अभी भाभी को बुलाती हूं।''

''बुला ले जिसे बुलाना है पर मैं तो आज बिना चोदे नहीं छोडने वाला'' कहते हुए उसके ब्लाउज को खींच कर खोल दिया। फिर एक हाथ को नीचे ले जाकर उसके पेटीकोट के अन्दर हाथ घुसा दिया और उसकी चिकनी चिकनी जांघों को सहलाने लगा। धीरे धीरे हाथ उसकी चूत पर ले गया। पर वो दोनों जांघों को कस कर दबाए हुए थी। मैं उसकी चूत को ऊपर से ही कस कस कर मसलने लगा और उंगली को किसी तरह चूत के अन्दर डाल ही दिया। उंगली अन्दर होते ही वह कस कर छटपटाई और बाहर निकालने के लिए कमर हिलाने लगी। इस से उसका पेटीकोट ऊपर हो गया। मैंने कमर पीछे करके लन्ड को उसके नंगे चूतडों की दरार में लगा दिया। क्या फूले फूले चूतड थे। अपना दूसरा हाथ भी उसकी चूचियों पर से हटा कर उसके चूतड को पकड लिया और अपना लन्ड से उसकी गान्ड की दरार में ही तेजी से शॉट लगाने लगा। अब उसकी चूत को मैं उंगली से चोदते हुए गान्ड की दरार में लन्ड धांस रहा था। कुछ ही देर में वो भी ढीली पड गई और जांघों को ढीला कर के कमर हिला हिला कर आगे और पीछे की चुदाई का मजा लेने लगी।

''क्यों रानी मजा आ रहा है ना'' धक्का लगाते हुए मैंने पूछा।

''हां बाबू। बहुत मजा आ रहा है।'' उसने अपनी जांघें और फैला दी जिस से कि मेरी उंगली आसानी से अन्दर बाहर होने लगी। फिर उसने अपना हाथ पीछे करके मेरे लन्ड को

पकड लिया और उसकी मोटाई को नाप कर बोली "हाय राज्जा इतना मोटा लन्ड। कौन इस से चुदाने से इन्कार कर सकता है। चलो मुझे सीधी होने दो" कहते हुए वह चित्त लेट गई।

अब हम दोनो अगल बगल लेटे थे। मैंने अपनी टांग उसकी टांग पर चढा दी और लन्ड को उसकी जांघ पर रगडते हुए चूचियों को चूसने लगा। पत्थर की जैसी सख्त थी उसकी चूचिया। एक हाथ से उसकी चूची मसल रहा था और दूसरे हाथ की उंगली से उसकी चूत चोद रहा था। वह भी लगातार मेरे लन्ड को पकड कर अपनी जांघों पर घिस रही थी। जब हम दोनो पूरी तरह जोश में आ गए तब आशा बोली "अब और मत तडपाओ राज्जा। चोद दो मुझे अब।"

मैंने झटपट उसकी साडी और पेटीको को कमर से ऊपर उठा कर चूत को पूरा नंगा कर दिया। वो बोली "पहले कपडे तो उतारो"। मैं बोला "नहीं तुझे अधनंगी देख कर जोश और डबल हो गया है। इसलिए पहली पकड तो कपडों के साथ ही होगी।"

फिर मैंने उसकी टांगें अपने कन्धें पर रखीं और उसने मेरा लन्ड पकड कर अपनी चूत के मुंह पर रख लिया और बोली "आओ राजा। शुरू हो जाओ"। मैंने कमर आगे करके जोर का धक्का दिया और मेरा आधा लन्ड दनदनाता हुआ उसकी चूत में धंस गया। वो बोली "हाय राज्जा जीयो। क्या शॉट लगाया है"।

मैंने उसकी सख्त चूचियों को पकड कर मसलते हुए दूसरा करारा शॉट लगाया और मेरा बचा हुआ लौंडा भी जड तक उसकी चूत में धंस गया। मारे दर्द के उसकी आह निकल गई। बोली "राज्जा बडा जालिम है तुम्हारा लौंडा। किसी कुंवारी छोकरी को चोदोगे तो वो तो मर ही जाएगी। संभल कर चोदना।"

मैं उसकी चूचियों को मसलते हुए धीरे धीरे लन्ड चूत में अन्दर बाहर करने लगा। चूत तो इसकी भी टाईट लग रही थी। जैसे भाभी ने सिखाया था वैसे ही लन्ड को पूरा बाहर निकाल कर दोबारा झटके से अन्दर डाल रहा था। जैसे जैसे उसकी मस्ती बढने लगी वो भी नीचे से कमर उठा उठा कर मेरे हर शॉट का जवाब देने लगी। मैंने धीरे धीरे अपनी रफ्तार तेज की और उसी हिसाब से वो भी तेजी से चूतड उछाल उछाल कर जवाब देने लगी। कन्धे पर टांग रखी होने की वजह से उसकी चूत पूरी फैल गई थी और मेरा लन्ड सटासट उसकी चूत में पूरा का पूरा अन्दर बाहर हो रहा था। लम्बी चुदाई से उसकी चूत पानी छोड रही थी और ढीली सी लग रही थी। इस लिए थोडी तक इस आसन में चोदने के बाद मैंने आशा की टांगें नीचे कर दीं और उसके ऊपर लम्बा होकर चोदने लगा। अब उसकी चूत

थोडी कस गई और मेरा लन्ड घर्षण के साथ अन्दर बाहर होने लगा जिससे मजा दोगुना हो गया। अब आशा ने मेरी गर्दन में बांहें डाल कर मेरा सिर नीचे किया और अपनी चूची को मेरे मुंह में देकर चुसाने लगी। सच आशा की चूचियां तो भाभी से भी ज्यादा रसीली और मजेदार थी। आशा साथ साथ मुझे बढावा भी दे रही थी। "चोद लो राज्जा चोद लो। चार ही दिन की तो जव्वानी है। मेरा सारा बदन तुम्हारे हवाले है। जी भर कर मजे ले लो। हाय राज्जा क्या मस्त लौंडा है तुम्हारा। पहले पता होता तो कब की चुदवा चुकी होती तुमसे।"

मेरी भी सांसें फूल रही थी। पर पिछली दो रातों की चुदाई की वजह से लन्ड झडने का नाम नहीं ले रहा था। आशा अब तक तीन बार झड चुकी थी पर मेरे लन्ड की ताकत देख कर अभी भी मैदान में टिकी हुई थी और मस्ती के साथ चूतड उछाल उछाल कर लन्ड अपनी चूत में निगल रही थी। मैंने सुस्ताने के खयाल से अपनी रफ्तार थोडी धीमी कर दी और उसके सीने पर सिर रख कर आराम करने लगा। आशा ने प्यार से मेरे माथे पर से पसीना पोंछा और पीठ सहलाते हुए मेरे होठों को चूमने लगी। कुछ देर तक यूंही पडे रहने के बाद आशा बोली "आओ राज्जा अब मैं तुम्हें दूसरा मजा दूंगी"।

आशा ने मुझे अपने ऊपर से उठ कर घुटनों और कोहनी के बल झुक कर लेटने को कहा। मैं बिस्तर पर चौपाया बन गया। फिर आशा मेरे पीछे आई और मेरे चूतडों को फैला कर अपनी चूत मेरी गान्ड के छेद पर लगा दी। फिर दोनों हाथ बगल से नीचे लाकर मेरे लौंडे को पकड कर हिलाते हुए कमर चलानी शुरू कर दी। मैं तो मस्ती में झूम उठा। गान्ड पर आशा की चूत की रगड मुझे पागल बना रही थी। वो मेरी पीठ से कस कर चिपकी हुई थी जिससे की उसकी कडी कडी चूचियां मेरी पीठ में गड रही थी। वो मेरे कान में फुसफुसा कर बोली "क्यों राज्जा मजा आ रहा है चूत से गान्ड मराने में"।

मैं मस्ती के आलम में था। उसकी गीली गीली चूत से रस मेरी गान्ड में लग रहा था। एक अजीब ही तरह की सनसनी पूरे बदन में दौड रही थी। मैं अपनी गान्ड ज्यादा से ज्यादा फैला कर उसकी चूत की नोक को अपनी गान्ड में लेने की कोशिश कर रहा था। आशा एक सधे हुए चोदू की तरह से सटासट धक्के लगा रही थी। मैं भी कमर आगे पीछे करके एक चुदास की तरह मजे ले रहा था। यूं लगने लगा था मानो वो एक मर्द हो जो अपनी माशूका की चुदाई कर रहा हो। मेरा लन्ड आशा के हाथों में तना जा रहा था। लगता था कि अब झडा कि तब।कुछ देर तक इसी तरह से मेरी गान्ड मारने के बाद आशा उठ कर मेरे बगल में ही चौपाया बन गई और बोली "आओ राज्जा अब पीछे से ले लो मेरी"। मैं उठ कर आशा के पीछे आया और लन्ड पकड कर उसकी चूत पर रगडने लगा। उसके उभरे उभरे चूतडों को देखकर मेरा इरादा बदल गया। मैंने पहले अपने हाथ की चारों

उंगलियां उसकी चूत में डालकर निकाल ली। उसका लसलसा पानी मेरे हाथ में लग गया। अब इसे उसकी गान्ड पर रगडते हुए अपना लन्ड भी जड तक आशा की गान्ड में पेल दिया। दो चार बार अन्दर बाहर करने के बाद बाहर निकाला तो देखा कि लन्ड उसकी चूत के पानी से पूरी तरह से चिकना हो गया है। अब दोनो हाथों से उसकी गान्ड को चौडा करके सुपाडा आशा की गान्ड पर रखा और जब तक वो कुछ समझे सटाक से धक्का लगा कर अन्दर दाखिल कर दिया।

सुपाडा गान्ड में घुसते ही वो जोर से चीखी और बोली "हाय जालिम। मेरी गान्ड फाड दी"। वो कमर आगे करके मेरा लन्ड निकालने की कोशिश करने लगी पर मैं मजबूती से उसके रसीली चूतडों को पकड कर दनादन शॉट मारने लगा। अब मेरा पूरा लन्ड आशा की गान्ड में घुस गया था। गान्ड मराने में आशा को बहुत दर्द हुआ और बार बार विनती करने लगी कि मैं अपना लन्ड उसकी गान्ड से बाहर निकाल लूं। पर मैंने उसकी एक ना सुनी। मैं अपनी उंगलियां उसकी चूत में अन्दर बाहर करते हुए तन तन कर शॉट मारता रहा। थोडी देर में उसको भी मजा आने लगा और वो भी कमर हिला हिला कर मेरा साथ देने लगी। उसकी गान्ड मारने में मुझे भी बहुत मजा आ रहा था। फूले फूले चूतड मखमली गद्दों जैसे लग रहे थे। उसकी कसी गान्ड में लन्ड डाल कर चोदते चोदते मेरी मंजिल आ गई और मैंने पूरा रस उसकी गान्ड में उडेल दिया। मेरी उंगलियों से चुदवा कर आशा भी झड गई।

जब मैंने उसकी गान्ड से अपना लौंडा बाहर खींचा तो 'पक' की आवाज के साथ बाहर निकल आया मानो बोतल से कॉर्क निकाली हो। मेरा वीर्य उसकी गान्ड से बहते हुए उसकी चूत में जाने लगा। मैंने उसे बिस्तर पर अपने पास लिटा लिया और फिर से दबोच कर चूचियों का मजा लेने लगा। वो भी मेरे लन्ड को पकड कर हिलाने लगी।

"अच्छा तो यह हो रहा है" दरवाजे पर से भाभी की आवाज आई।

हम दोंनो चौंक पड़े। चुदाई की मस्ती में भाभी का खयाल ही दिमाग से उतर गया था। भाभी हमारे पास आई और आशा के चूतडों पर चपत जमाती हुई बोली "साली मैं वहां रसोई में तेरा इन्तजार कर रही हूं कि आकर तू काम पूरा करे और यहां तू टांग उठा कर लन्ड खा रही है। और तुम भी देवर राजा बडे बेसब्र हो। मैंने कहा था ना कि मैं आशा से बात करूंगी। पर तुमने तो खुद ही पटा लिया।"

मैंने भाभी को पकड कर बिस्तर पर अपने पास ही लिटा लिया और उनकी चूचियों को मसलते हुए बोला "आओ ना भाभी। बडी मस्त चीज है ये। अब हम सब साथ साथ मजे लेंगे।"

भाभी ने आशा की चूचियों को पकड कर चूमते हुए कहा "हां वाकई मस्त माल है। चलो कल रात की हसरत पूरी होगी और आगे के लिए भी रास्ता साफ हो गया।"

मैंने आशा को आंख का इशारा किया और वो सब समझ कर भाभी से चिपट गई। हम दोनों ने मिल कर भाभी को पूरा नंगा कर दिया। फिर आशा भी अपने पूरे कपडे उतार कर नंगी हो गई और भाभी के ऊपर चढ कर चूत से चूत रगडती हुई उनकी चूचियों को चूसने लगाी। भाभी भी आशा को जकड कर चूतड उछाल कर मजे ले रही थी। मैं उठ कर भाभी के सिर के पास आया और अपना लन्ड उनके मुंह में दे दिया। भाभी जीभ लपलपा कर मेरा लन्ड चूसने लगी। मैंने अपना हाथ उन दोनों के बीच घुसा कर दोनों की चूचियों का मजा लेना शुरू कर दिया।

थोडी देर तक इसी तरह मजे लेने के बाद हमने अपना आसन बदला। अब आशा भाभी की चूत को जीभ से चोद रही थी। भाभी मेरा लन्ड चूसने लगी जबकि मैं आशा की चूत चाट रहा था। फिर आशा और भाभी **69** में आ गई और मैं आशा की चूत चोदने लगा। भाभी मेरे आन्डों को चाटने लगी। बिल्कुल पिछली रात की पिक्चर वाला सीन था।

हम दिन भर इसी तरह मस्ती करते रहे। आशा उस दिन अपने घर नहीं गई और हमारे साथ जवानी का खेल खेलती रही।

जब तक भैया वापस नहीं आए हम तीनों ही दिन रात चुदाई चुदाई खेलते रहे। हम लोगों ने हर तरह से चुदाई की। पूरे घर में हम चोदते। कभी किचन में कभी ड्राइंग रूम में साथ साथ नहाते हुए। एक दिन मैं नकली लौंडा डिल्डो बाजार से खरीद लाया। उस दिन तो भाभी ने आशा की चूत और गान्ड की धज्जियां ही उड़ा दीं। मुझे भी नहीं छोडा। जब मैं आशा को चोद रहा था तो मेरे पीछे आकर डिल्डो से मेरी भी गान्ड मार ली।

वो दिन याद कर कर के आज भी मेरा लन्ड खडा हो जाता है। भाभी का एहसान मैं कभी नहीं भूल सकता। वही तो मेरी पहली गुरू थी जिसने चोदाई की कला में मुझे माहिर बनाया।